पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

संपादकीय

अनुसंधान सुनियोजित, सुसंगठित एवं गंभीर चिंतन की एक महत्त्वपूर्ण प्रणाली है। यह एक तार्किक और वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है। शोध अध्येताओं द्वारा ज्ञान के विविध अनुशासनों को हिंदी साहित्य से जोड़कर अनुसंधान किए जाने की दिशा में लगातार सार्थक प्रयत्न किया जा रहा है। अध्ययन एवं चिंतन की इस कड़ी में शोध-नवाचरों से संबंधित कई ऐसे महत्वपूर्ण बिन्दु हैं, जिस पर शोध संस्थानों, अनुसंधानकर्ताओं एवं शोध-निर्देशकों का ध्यानाकर्षण आवश्यक है। संस्थानों में शोध विषय को स्वतंत्र रूप से चयन करने का पूर्णरूपेण अधिकार शोधार्थियों को होना चाहिए। इसके साथ ही संबंधित विषय में शोध-निर्देशक की दक्षता भी अपेक्षित है। शोधार्थियों को अनिवार्यतः यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि उसके शोध की सामाजिक उपादेयता एवं उपलब्धि क्या है? विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार सामाजिक सरोकारों से संबद्ध शोध विषयों को ही मूल्यांकन प्रणाली में शामिल किया जाना है, इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शोध की सामाजिकता एवं सोद्देश्यता पर विशेष ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है।

शोध-अध्येताओं द्वारा अनुसंधान के क्षेत्र में विषय-चयन के दायरे का संकुचन, एक चिंताजनक विषय है। अक्सर देखा जाता रहा है कि शोधकर्ता शोध की पारंपरिक जड़ता से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। डायरी, संस्मरण, रिपोर्ताज, पत्र आदि साहित्य की कई ऐसी महत्वपूर्ण विधाएँ हैं, जिस पर बहुत ही कम शोध-कार्य हो रहे हैं। इस दिशा में नई दृष्टियों के साथ शोध-कार्य करने की अपार संभावनाएं हैं। साहित्य की कई ऐसी महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएँ हैं, जिन पर अनुसंधान करने की पर्याप्त गुंजाइश है, इस दिशा में अनुसंधानकर्ताओं को प्रेरित किया जाना चाहिए।

तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से देखें तो इस क्षेत्र में भी अनुसंधान कार्य करने का फ़लक अत्यंत विस्तृत है। जो शोधार्थी दो भाषाओं में विशेज्ञता रखते हैं, उन्हें प्रमुखता के साथ तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में शोध-कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। इससे दो भाषाओं के साहित्य के मध्य समरसता, साम्य-वैषम्य एवं उसके सांस्कृतिक पक्ष को समझने में मदद मिलेगी। दूसरी भाषा के साहित्य का यदि पर्याप्त अनुवाद संस्करण उपलब्ध है तो अनूदित रचनाओं के माध्यम से भी तुलनात्मक शोध-कार्य संभव है।

अनुसंधानकर्ताओं से यह अपेक्षा रखी जाती है कि उसके द्वारा प्रस्तुत सामग्री तथ्यपरक और विज्ञान सम्मत हो। शोधार्थियों को हमेशा अपनी शोध-सीमा को ध्यान में रखते हुए विषय-चयन का करना चाहिए ताकि निर्धारित समय में वह अपने शोध-विषय के साथ न्याय कर सके।

पूर्वोत्तर प्रभा के तृतीय अंक में 18 लेखों को शामिल किया गया है। इस अंक में विषय-विविधता के साथ राष्ट्रीय स्तर पर तथ्यपरक, तर्कसंगत एवं सामाजिक सोद्देश्यता को ध्यान में रखते हुए प्रतिनिधि शोध-पत्रों का चयन किया गया है। पूर्वोत्तर प्रभा पत्रिका निरंतर अपनी प्रगति की ओर अग्रसर है, इसके लिए हम पूर्वोत्तर प्रभा से संबद्ध सभी विद्वानों एवं लेखकों के प्रति आभार प्रकट करते हैं। विश्वास है, यह सहयोग निरंतर बना रहेगा। इसी आशा के साथ पूर्वोत्तर प्रभा का वर्ष: 2 अंक-1 आप सबके समक्ष प्रस्तुत है।

(डॉ. प्रदीप त्रिपाठी)
संपादक, पूर्वोत्तर प्रभा, वर्ष: 2 अंक-1